इकाई 2 विद्यालय गमन

इकाई की रूपरेखा

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देष्य

2.3 विद्यालय (बच्चों के जीवन में एक आधुनिक संस्थान के रूप में)

2.4 अध्यापकों से संबंध

2.4.1 अध्यापकीय अपेक्षाएँ एवं विद्यार्थियों की उपलब्धि

2.5 संगी–साथियों से संबंध

2.5.1 मित्रता एवं समूहः वर्ग, जाति, लिंग

2.5.2 स्वीकार्यता, प्रतिस्पर्धा, सहयोग एवं द्वंद्व

2.5.3 आक्रामकता एवं डराना–धमकाना

2.6 विद्यालयों से वंचित बच्चे

2.7 सारांष

2.8 इकाई के अंत में अभ्यास

2.9 बोध प्रष्नों के उत्तर

2.10 पठनीय सामग्री

2.1 प्रस्तावना

विद्यालय गमन उन बच्चों के जीवन का महत्वपूर्ण अवसर होता है जो विद्यालय जा सकते हैं। यह एक ऐसा समय होता है जब, एक नया संस्थान, बच्चों के सामाजिक विष्व का अंग बनता है। एक बच्चा परिवार एवं समुदाय के अलावा अन्य लोगों से संबंध स्थापित करना प्रारंभ करता है। वह अध्यापकों, प्रधानाचार्या, समान आयु के और बड़े साथियों तथा दूसरे लिंग के साथियों से मिलता है और उनके साथ विभिन्न प्रकार के संबंध स्थापित करता है। उसे इन संबंधों से अच्छे और बुरे, विभिन्न प्रकार के अनुभव मिलते हैं जो विष्व को समझने और दूसरों से संबंध स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह सभी बच्चों के व्यक्तित्व विकास (षारीरिक, सामाजिक, सांवेगिक, संज्ञानात्मक एवं भाषा) में निर्माणात्मक भूमिका निभाते हैं। इन बच्चों के लिए, विद्यालय, उनके दैनिक जीवन का कम से कम अगले 12 वर्षों तक अभिन्न अंग हो जाते हैं। साथ ही, बहुत से ऐसे बच्चे भी हैं जो विद्यालय नहीं जा पाते या ऐसी परिस्थितियों में हैं, जिसमें विद्यालय जाना जारी रखना कठिन है। एक बच्चा भले ही विद्यालय न जा पाता हो पर विद्यालय का उसके वृहद सामाजिक विष्व में एक भाग है। इस इकाई में हम, विद्यालय जाने संबंधी इन्हीं अनुभवों पर प्रकाष डालने का प्रयास करेंगे।

2.2 उद्देष्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आपः

- बच्चों के जीवन में विद्यालय का स्थान समझ सकेंगे;
- विद्यालय में विकसित होने वाले विभिन्न सामाजिक संबंधों को आलोचनात्मक रूप से स्पष्ट कर सकेंगे; और

- विद्यालय नहीं जा रहे बच्चों या विद्यालय मे कठिनाई अनुभव करने वाले बच्चों के अनुभवों पर प्रकाष डाल सकेंगे।

2.3 विद्यालय (बच्चों के जीवन में एक आधुनिक संस्थान के रूप में)

चित्र 2.1: गुरुकुल

विद्यालय इतने पुराने समय से हमारे आसपास है कि यह स्वीकार करना कठिन है कि विद्यालयों का वर्तमान स्वरूप केवल उपनिवेषकाल में विकसित हुआ। उससे पहले, भारत में ऐसे विद्यालय नहीं थे, परंतु बहुत सी ऐसी संस्थाएँ थीं जहाँ बच्चे या "छोटे प्रौढ़" सामाजिक तौर–तरीकों से परिचित होते थे जैसे – गुरुकुल, मदरसा, मुनीमों द्वारा चलाए जाने वाले बही–खाता विद्यालय आदि। विद्यालय को जिस रूप में आज जानते हैं, वह पहली बार ईसाई मिषनरियों ने स्थापित किए जो यूरोप से आई थीं। यहाँ तक कि यूरोप में भी यह विद्यालय औद्योगिक क्रांति के दौरान ज्यादा प्रभावी ढंग से विकसित हुए।

विद्यालयों के विकास के साथ ही विशेष रूप से बच्चों के सामाजिक विष्व में सामाजिक–राजनीतिक परिदृश्यों में बहुत से परिवर्तन हुए। आगे बढ़ने से पहले निम्न बिन्दुओं पर सोचते हैं:

चित्र 2.2: मदरसा

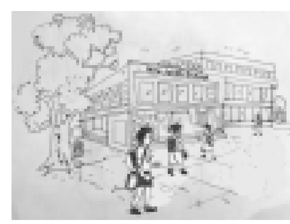

चित्र 2.3: विद्यालय

गतिविधि 1

1) क्या आपको लगता है कि विद्यालय हममें से प्रत्येक के जीवन का महत्वपूर्ण अंग हैं? क्यों?

....

....

....

....

2) हमारे जीवन में विद्यालय क्या भूमिका निभाता है? कोई पाँच बताइएँ।

....

....

....

....

....

3) बच्चा विद्यालय में, पाठ्यवस्तु के अतिरिक्त क्या सीखता है?

....

....

....

....

....

4) निम्नलिखित संदर्भों में विद्यालय के बिना, समाज कैसा होगा? आप क्या सोचते हैं?

क) बच्चे के जीवन में परिवार की भूमिका

....

....

....

ख) अन्य संस्थाओं जैसे (पास–पड़ोस, वृहद परिवार, समुदाय आदि) की भूमिका

....

....

....

ग) परिवार में बच्चे का स्थान एवं भूमिका

....

....

....

विद्यालयों के बिना हमारे जीवन की कल्पना थोड़ी कठिन है। इस प्रकार सोचने पर हम अचम्भित होते हैं कि तब दिन में बच्चे क्या करेंगे? यदि अभिभावक कार्य करने जाएँगे तो वे कहाँ रहेंगे? क्या विद्यालय न होने से परिवार की संरचना प्रभावित होगी? जैसे कि संयुक्त परिवार व्यवस्था ज्यादा प्रचलन में होगी? क्या इसका कार्य संस्कृति पर कोई प्रभाव पड़ेगा? जैसे कि किसी एक को (माता–पिता में से) घर पर हर समय रहना होगा? क्या इसका यह भी अर्थ है कि बच्चों से घर में कुछ जिम्मेदारियों की अपेक्षा की जाएगी या वे कब शारीरिक रूप से सक्षम होंगे? क्या ये संज्ञानात्मक रूप से पहले परिपक्व हो जाएँगे? उनके साथियों से कैसे संबंध होंगे? ये वे प्रष्न हैं जिनके विषय में सोचना बहुत आसान नहीं है? वह भी तब, जब हममें से अधिकांष का जीवन विद्यालयों के साथ विकसित हुआ है।

विद्यालय का प्रत्यय प्रदर्षित करता है कि परिवार कैसे अपना समय, कार्य, वित्त एवं कभी–कभी स्थान भी इसके आधार पर तय करते हैं। विद्यालय न केवल बच्चे, वरन पूरे परिवार का अच्छा–खासा समय और ध्यान आकर्षित करते हैं। जैसे कि, परिवार के सदस्य विद्यालय के समय के अनुसार उठते हैं, विद्यालयी जीवन के अनुसार भोजन बनाते हैं; और बच्चे की शैक्षिक आवष्यकताओं के अनुसार अपने घर में स्थान (यदि पर्याप्त स्थान हो तो) तय करते हैं। कम से कम माता–पिता में से एक बच्चे के गृहकार्य एवं अध्ययन को अपना समय समर्पित करता है, माता–पिता इस प्रकार अर्जन और बचत करते हैं कि वे अपने बच्चे की शैक्षिक आवष्यकताओं की पूर्ति कर सकें। परीक्षा के समय न केवल बच्चा, वरन पूरा परिवार चिन्तित रहता है और परीक्षा परिणाम घोषित होने का दिन, उनके लिए खुषी या दुःख का एक अवसर होता है। परिवार और हमारे आसपास की अधिकांष बातचीत विद्यालय के आसपास घूमती है। परिवार के सबसे महत्वपूर्ण निर्णयों में एक विद्यालय का निर्णय होता है। वे बच्चों के विद्यालयपूर्व षिक्षण की व्यवस्था भी करते हैं जिससे कि बच्चा विद्यालय में ठीक से समायोजित हो सके।

गतिविधि 2

1) आगे बढ़ने से पहले, कुछ और तरीके बताइएँ जहाँ विद्यालय, परिवार के दैनिक जीवन को प्रभावित करता है,

1)

2)

3)

4)

5)

यह बिल्कुल स्पष्ट है कि किस प्रकार विद्यालय पारिवारिक जीवन का केन्द्रीय अंग हो जाते हैं, और बच्चों के जीवन का भी। यद्यपि, विद्यालय जाना, अलग–अलग बच्चों के लिए अलग–अलग अनुभव होता है।

विद्यालय जाने का प्रारंभ

चित्र 2.4: विद्यालय जाना

बच्चे विद्यालय क्यों जाएँ? इसके बहुत से कारण हैं। सबसे पहला कारण है षिक्षा पाने के लिए, दूसरा, समाजीकरण। सामाजिक, आर्थिक परिप्रेक्ष्य एवं किसी के भी अपने दृष्टिकोण के अनुसार कारण अलग–अलग हो सकते हैं। विद्यालय जाने का मुख्य कारण 3–आर (पढ़ना, लिखना एवं गणित) को सीखना भर नहीं है। एक नन्हें बच्चे को प्रारंभिक विद्यालय भेजने का उद्देष्य महत्वपूर्ण सामाजिक कौषलों का विकास है। छोटी आयु में अन्य बच्चों के साथ अंतःक्रिया से बच्चे व्यवहार करना, सुनना और बाँटना सीखते हैं। दूसरे बच्चों के साथ खेलना, उनके व्यक्तित्व के विकास में भी सहायक होता है। जब बच्चा घर में अकेला होता है, उसके वैयक्तिक अधिगम अनुभव होते हैं पर जब वे विद्यालय जाता है, उसका सामाजिक जाल बढ़ता है। निम्नलिखित उदाहरणों द्वारा विद्यालय जाने के प्रति बच्चों के विभिन्न दृष्टिकोणों एवं प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण किया जा सकता है।

उदाहरण 1

सोनू एक छः वर्षीय बच्चा है जिसने पहली बार विद्यालय जाना प्रारंभ किया है। उसे सुबह 6.30 बजे उठना, वे भी जाड़ों में, बिल्कुल पसंद नहीं है। माँ उसे जल्दी से उठाकर, कपड़े पहना देती है, जबकि वह तैयार होने में आनाकानी करता है। उसे अक्सर, इस व्यवहार के लिए, पिता से डाँट पड़ती है। उसे जबरदस्ती एक गिलास दूध निगलना पड़ता है, क्योंकि विद्यालय जाने को देर हो रही होती है। पिता उसे लेकर विद्यालय को दौड़ जाते हैं। सोनू, विद्यालय के द्वार तक पहुँचते–पहुँचते रुँआसा हो जाता है। कक्षा में कभी–कभी वह रोने लगता है कि उसे अपनी माँ के पास जाना है। सोनू की अध्यापिका भी अक्सर उसे डाँट देती हैं।

शुरु में उसके पिता, कुछ देर कक्षा में ही बैठते हैं और जब सोनू शांत हो जाता है। वे वहाँ से धीरे से चले जाते हैं। सोनू अपने पिता को वहाँ न पाकर और जोर से रोता है। ऐसा केवल सोनू नहीं, 70 प्रतिषत से ज्यादा बच्चे करते हैं। कक्षा भरी हुई है, बहुत साफ नहीं है और बैंच कम होने के कारण बच्चे भींच कर बैठते हैं। बच्चे अक्सर स्थान के लिए झगड़ते हैं और एक–दूसरे को धक्का देते हैं। कोई अध्यापिका को नहीं सुनता। ऐसी स्थितियों में उसकी पाठ योजना काम नहीं कर पाती। वह बच्चों से या तो अंग्रेजी या शुद्ध हिन्दी में बात करती है; जबकि ज्यादातर बच्चे स्थानीय भाषा समझते हैं। अध्यापिका परेषान है और नहीं जानती है कि क्या करें? विद्यालय की प्रधानाचार्या को इससे कोई असर नहीं पड़ता। वह विद्यालय परिसर में अनुषासन देखना चाहती है और यदि कहीं थोड़ा–सा भी शोर हो तो अध्यापिका से नाराज हो जाती है।

उदाहरण 2

नीतू एक सात वर्षीय बच्ची है जो पिछले एक वर्ष से विद्यालय जा रही हैं। प्रारंभ में वह थोड़ा–थोड़ा सोनू की तरह व्यवहार करती थी, परंतु अब नहीं करती। जैसे ही माँ उसे कहती है, वह स्वयं ही उठ जाती है। वह स्वयं कपड़े पहनती है और दूध और नाष्ता लेती है। माता–पिता, उसे विद्यालय भेजने को लेकर जल्दी में नहीं होते। प्रारंभ में उन्होंने सुनिष्चित किया कि वे अक्सर उसके अध्यापकों व अन्य बच्चों के माता–पिता से मिलते रहें। माता–पिता ने पास–पड़ोस के अन्य बच्चों से उसका परिचय कराया जो उसी विद्यालय में जाते थे और उसकी मित्रता बढ़ाने में मदद की। परिणामस्वरूप, अब नीतू के घर और विद्यालय में समान मित्र हैं; बहुत से अभिभावक भी एक–दूसरे के बच्चों को जानते हैं।

अमीना प्रारंभ से ही नीतू की अध्यापिका है। नीतू को हमेषा उसकी अध्यापिका कक्षा के दरवाजे पर बच्चों का इंतजार करती मिलती है। वह नीतू का गर्मजोषी से स्वागत करती है और उनका हालचाल पूछती है। जब सभी बच्चे कक्षा में बैठ जाते हैं तो वह किसी रोचक गतिविधि से कक्षा प्रारंभ करती है। वह सुनिष्चित करती है कि सभी बच्चों को बोलने व अभिव्यक्ति का अवसर मिले। अमीना ने परिदृश्य को बेहतर ढंग से समझने के लिए स्थानीय बोलचाल की भाषा को भी समझा है। अमीना यह भी ध्यान रखती है कि कक्षा स्वच्छ रहे, उचित प्रकार से हवादार हो, और बच्चों के बैठने का पर्याप्त स्थान हो। वह कक्षा में बैठने के क्रम को नियंत्रित नहीं करती हैं, जिससे दोस्त साथ–साथ बैठ सकते हैं, अमीना सुनिष्चित करती है कि जब बच्चों में अभिभावक उन्हें छोड़ने आएँ तो वह उनसे बातचीत कर सके, षिकायत के लिए नहीं बल्कि उनके बच्चे विद्यालय में क्या कर रहे हैं, इससे अवगत कराने के लिए। यह भी महत्वपूर्ण बिन्दु है कि उस विद्यालय की प्रधानाचार्या भी स्वयं बच्चों, अध्यापिकाओं और माता–पिता से मिलने का प्रयास करती है। सभी बच्चे,

उनके अभिभावक और अध्यापिकाएँ यह अनुभव करते हैं कि प्रधानाचार्या बहुत विनम्र और मृदुभाषी हैं और सभी के लिए एक आदर्श हैं।

उदाहरण 3

नीतू के छोटे भाई मनु ने इसी वर्ष विद्यालय में प्रवेष लिया है और आष्चर्यजनक है कि वह कभी भी सोनू की तरह नहीं रोता। दोनों भाई–बहन साथ–साथ विद्यालय आते जाते हैं। मनु अक्सर नीतू की कक्षा के दरवाजे पर खड़ा मिलता है। नीतू इससे झुंझला जाती है। नीतू की अध्यापिका, दोनों बच्चों की कठिनाई समझती हैं और मनु को कक्षा में बैठने की अनुमति दे देती हैं। वह हमेषा उसे कोई न कोई काम दे देती है। वैसे ही मनु की कक्षा अध्यापिका भी उस पर कभी नहीं चिल्लाती और उसे रुचिपूर्ण कार्यों में लगाए रखती हैं। मनु जब अपनी बहन से मिलना चाहता है तो अध्यापिका उसे नीतू की कक्षा में ले जाती है।

अध्यापिका ने देखा है कि मनु ठीक से समायोजित हो रहा है और अब ज्यादा स्वतंत्र हो गया है। माता–पिता को मनु के व्यवहार के विषय में जानकारी दी जाती है पर उन्हें कभी जिम्मेदार नहीं ठहराया जाता। दोनों अध्यापिकाएँ सभी बच्चों की पसंद–नापसंद के बारे में उनके माता–पिता से चर्चा करती है।

गतिविधि 3

उपरोक्त उदाहरणों का निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर विश्लेषण करें:

तीनों बच्चों के विद्यालयी अनुभवों से इनकी भूमिका कैसे स्पष्ट होगी?	सोनू	नीतू	मनु
अभिभावक			
भाई–बहन			
अध्यापक			
संगी–साथी			
कक्षा की मूलभूत सुविधाएँ			
षिक्षण–अधिगम योजनाएँ एवं भाषा			
विद्यालय का प्रधानाचार्य			
विद्यालय संस्कृति			
विद्यालय एवं घर के बीच वार्तालाप			

घर–विद्यालय सातत्य और असातत्य

यदि आप, ऊपर विकसित किए हुए आव्यूह (मैट्रिक्स) को ध्यान से पढ़ेंगे, तो आप अनुभव करेंगे कि बाद वाले दोनों उदाहरणों में घर और विद्यालय के बीच काफी अंतःक्रिया हुई है। इससे नीतू और मनु, दोनों का विद्यालय परिस्थितियों में बेहतर तारतम्य बैठाने में लाभ हुआ है।

विद्यालय जाना, बच्चे के जीवन का वह पहला अवसर होता है जब वह अपने घर से अच्छे–खासे समय के लिए अलग होता है। यह प्रत्येक बच्चे के लिए स्वयं में एक सांवेगिक

चुनौतीपूर्ण अनुभव है। उसे लगता है कि उसे घर और माँ से अलग किया जा रहा है। वह अपने चारों ओर अनजान चेहरे देखता है जिनसे संबंध स्थापित नहीं कर पाता। बच्चे को घर की तुलना में विद्यालय में स्वतंत्र एवं आत्मनिर्भर होना होता है। विद्यालय में उसी की आयु के बहुत से बच्चे होते हैं जो संसाधनों व अध्यापक का ध्यान आकर्षित करने के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं जबकि घर में छोटे बच्चे की ज्यादा देखभाल होती है। विद्यालयों में निर्धारित नियम और मानक, घरों से बहुत भिन्न होते हैं। साथ ही घर और विद्यालय की भाषा में भी बहुत अंतर होता है। इसे **घर–विद्यालय असातत्य** कहते हैं।

विद्यालय एवं परिवार के सदाचार में बड़ा अन्तर, बड़ी असातत्यता को जन्म देता है और बच्चे को नवीन संस्थान में समायोजन में और कठिनाई होती है। विद्यालय और परिवार की संस्कृति में जितनी समानता होती है, बच्चा उतना सुविधाजनक अनुभव करता है। तुलना के लिए ऊपर दिए गए सभी कारक, विद्यालय एवं घर के बीच बेहतर तालमेल में अपनी भूमिका निभाते हैं। कभी–कभी विद्यालय की संस्कृति, घर की संस्कृति से भिन्न होती है, क्योंकि विद्यालय में ज्यादा सामाजिक–सांस्कृतिक विविधता पाई जाती है। विभिन्न बच्चों के भाषाई परिदृश्य, धर्म, आर्थिक स्तर, सांस्कृतिक लक्षणों एवं पसंद में विभिन्नता होती है। यहाँ तक कि अध्यापक भी विभिन्न सामाजिक–सांस्कृतिक विभिन्नताओं से होते हैं, जब तक कि विद्यालय ऐसी संस्कृति न बनाएँ जहाँ इस विविधता का आदर हो और इसे एक संसाधन के रूप में प्रयोग किया जाए, समायोजन कठिन हो जाता है (न केवल बच्चों के लिए वरन् बच्चों के विद्यालय जाने की प्रक्रिया में शामिल सभी के लिए)। अक्सर यह विभिन्न सामाजिक–सांवेगिक द्वंद्वों का स्रोत होता है। एक अध्यापक, एक ससंजक विद्यालय संस्कृति को सुनिष्चित करने में केन्द्रीय भूमिका निभा सकता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी: क) अपने उत्तर दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

1) आपके विचार से नीतू और सोनू के विद्यालयी अनुभव होने के लिए, मैट्रिक्स में लिखे गए कौन–कौन से कारक ज्यादा प्रभावी थे? और क्यों?

....

....

....

....

....

2) पहले व दूसरे उदाहरण में से, किस प्रकार के अध्यापक आप बनना चाहते हैं? और क्यों?

....

....

....

....

....

2.4 अध्यापकों से संबंध

अध्यापकों के साथ संबंध, बच्चे के सभी विद्यालयी अनुभवों का केन्द्र हैं। एक बच्चा, जो विद्यालय आता है वे अध्यापक की ओर न केवल एक शैक्षणिक मददगार के रूप में वरन् एक ऐसे बड़े के रूप में देखता है जिसकी एक देखभाल करने वाले, मित्र, श्रोता, समस्या समाधानकर्ता, और एक आदर्ष के रूप में बहुत सारी भूमिकाएँ हैं। बच्चे बड़े होने की प्रक्रिया में अध्यापकों का अनुकरण करते हैं तथा उसके अपने साथ बोलने, साथियों व अन्य अध यापकों, प्रधानाचार्य तथा अभिभावकों के साथ व्यवहार का आत्मसात करते हैं। वे अपने मानक बनाते हैं और उनको, अध्यापकों द्वारा बनाए गए मानकों की तुलना कर मूल्यांकित करते हैं।

2.4.1 अध्यापकीय अपेक्षाएँ एवं विद्यार्थियों की उपलब्धि

अधिसंख्य अध्यापकों के कुछ प्रिय विद्यार्थी होते हैं। वह उनसे अन्य की तुलना में बेहतर प्रदर्षन की अपेक्षा रखता है। प्रिय विद्यार्थी को अध्यापक की अपेक्षाओं पर खरे उतरना ही होता है। यह बार–बार दिखाई देता है कि कुछ बच्चों का अच्छा प्रदर्षन, अध्यापकों की पसंद व उनकी अपेक्षाओं का मानदंड बन जाता है और यह मानदंड स्वयं में बच्चे को और बेहतर बनने के लिए तैयार करता है। एक अध्यापक की अपेक्षाएँ, जब बच्चे में अंतरित हो जाती हैं तो बच्चे का प्रदर्षन प्रभावित होता है। कई बार जो बच्चा बेहतर प्रदर्षन करता है, अध्यापक उसकी ओर अधिक ध्यान देने लगता है और पक्षपाती हो जाता है। जब कोई मेधावी बच्चा अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरता, तो माना जाता है कि या उसके प्रयासों में कमी थी या कोई बाह्य कारण थे और जो बच्चे औसत या कमजोर प्रदर्षन करते हैं, उनसे भी उन्हीं मानदंडों पर प्रदर्षन की अपेक्षा सदैव की जाती हैं अध्यापकों को सामान्यतः उम्मीद भी नहीं होती कि वे बेहतर प्रदर्षन कर सकते हैं क्योंकि उनमें बेहतर प्रदर्षन की आंतरिक योग्यता कम है (जो श्रेष्ठ विद्यार्थियों में हैं)। यह बच्चों में एक कमजोर आत्मप्रत्यय को बढ़ावा देता है। ऐसी परिस्थितियाँ "धीमे अधिगमकर्त्ताओं" या "निम्न निष्पादन वाले बच्चों" को और अधिक संकोची बना देती है, वे कभी–कभी दुष्चिन्तित, अपमानित, अवज्ञाकारी या क्रोधी हो जाते हैं।

उदाहरण 4

कोइना एक दस वर्षीय बच्ची है जो पिछले एक वर्ष से विद्यालय जा रही है। वह अपने चार भाई–बहनों में सबसे बड़ी है। वह दिल्ली में यमुना नदी के किनारे की झुग्गी में रहती है। उसके पिता एक कबाड़ी की दुकान पर मजदूरी करते हैं। उनका काम कूड़े के ढ़ेर में बोतल, कार्ड बोर्ड, पाइप के खराब टुकड़े, लोहे का सामाना ढूँढ़ना है। पिता, कोइना व दो अन्य बच्चों को लेकर दोपहर बाद जाते हैं। तीनों प्लास्टिक का थैला लेकर, उसमें बाज़ार में फैले कूड़े के ढ़ेरों से सामान ढूँढ़ कर भरते हैं। वे घर लाकर, थैलों का सामान अलग–अलग इकट्ठा कर कबाड़ी को बेचते हैं। कभी–कभी इसमें विद्यालय के बाद का पूरा दिन लग जाता है और कोइना थका हुआ अनुभव करती है।

कोइना की अध्यापिका अपेक्षा रखती है कि वह रोज समय से आए, साफ सुथरी पोषाक में हो, खुद भी साफ हो, कक्षा में सक्रिय रहे, पाठ्यसहगामी क्रियाकलापों में भाग ले, गृहकार्य करे और परीक्षा में अच्छा प्रदर्षन करे। कोइना इनमें से कोई अपेक्षा पूरी नहीं करती। ज्यादातर वह अनुपस्थित रहती है। वह हमेषा थकी–थकी लगती है और कभी–कभी कक्षा में ही सो जाती है। उसकी पोषाक गंदी और कई जगह से फटी है। कोइना स्वयं भी साफ नहीं दिखती। वह कभी गृहकार्य नहीं करती और सारी परीक्षाओं में काफी कम अंक प्राप्त

करती है। उसे रोज अध्यापिका से डाँट पड़ती है पर कोई सुधार नहीं दिखता। अध्यापिका उससे व उस जैसे बहुत से बच्चों से चिढ़ती है।

वास्तव में, उस विद्यालय में 70 प्रतिषत से ज्यादा बच्चे कोइना जैसे हैं। अध्यापिका को लगता है कि इन बच्चों व इनके माता–पिता को पढ़ाई में कोई रुचि नहीं है। वे विद्यालय केवल मध्याह्न भोजन व अन्य योजनाओं का लाभ लेने के लिए आते हैं। कोइना को अब विद्यालय जाना उतना अच्छा नहीं लगता, जितना कि पहले लगता था।

बोध प्रष्न

टिप्पणीः क) अपने उत्तर दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

3) आप कोइना की परिस्थिति को कैसे देखते हैं? क्या आपको लगता है कि कोइना अध्यापक की अपेक्षाओं को पूरा नहीं कर सकती?

....

....

....

....

....

....

4) क्या आपको लगता है कि अध्यापिका की अपेक्षाएँ उपयुक्त हैं? अपने उत्तर की पुष्टि हेतु कारण दीजिए।

....

....

....

....

....

....

5) "इन बच्चों व इनके माता–पिता की पढ़ाई में कोई रुचि नहीं है, और ये विद्यालय केवल मध्याह्न भोजन व अन्य योजनाओं का लाभ लेने के लिए जाते हैं।" अध्यापिका की इस सोच पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

....

....

....

....

....

कई बार, अध्यापकों को बच्चों से कुछ आदर्श अपेक्षाएँ होती हैं जैसे कोइना की अध्यापिका की हैं परंतु कोइना जैसी परिस्थितियों में, बच्चों के लिए इन आदर्शों पर खरा उतर पाना संभव नहीं होता है।

कोइना व विद्यालय के कई अन्य बच्चों का सामाजिक वातावरण, अध्यापिका के मानकों से मेल नहीं खाता। इस कारण अध्यापक की अपेक्षाओं और बच्चों के प्रदर्षन एवं जीवन में एक अन्तर उत्पन्न हो जाता है। एक अध्यापक जो, सामाजिक परिप्रेक्ष्य व संरचना को समझता है, समझ सकता है कि उसे षिक्षण–अधिगम में किन चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। अतार्किक और औचित्यहीन अपेक्षाओं की बजाए, उसे अपने अधिगम प्रक्रिया की ऐसे नियोजित करना चाहिए, जिससे बच्चे विद्यालय में बेहतर ढंग से समायोजित हो सकें।

बोध प्रष्न

टिप्पणीः क) अपने उत्तर दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

6) कोइना के उदाहरण में, क्या आपको लगता है कि घर और विद्यालय में असातत्य है? अपने उत्तर के कारण बताइए।

....

....

....

....

....

....

7) आप कोइना की अध्यापिका को क्या सलाह देंगे?

....

....

....

....

....

....

2.5 संगी–साथियों से संबंध

विद्यालय जाने से बच्चों के जीवन में एक और महत्वपूर्ण संबंध विकसित होता है उनका समान आयु के लोगों या संगी साथियों से संबंध। संगी–साथियों में विभिन्न प्रकार के संबंध विकसित होते हैं। यद्यपि, ये संबंध साधारण होते हैं, परंतु उतने ही घनिष्ठ होते हैं, जितने कि प्रौढ़ों में। बड़े साथी समूह में, बच्चे का अपना एक छोटा समूह होता है, जिससे वह जुड़ा होता है। आपको अपने विद्यालय के मित्र याद हैं। आपको क्या लगता है कि केवल वे साथी ही आपके मित्र क्यों बनें?

2.5.1 मित्रता एवं समूहः वर्ग, जाति, लिंग

गतिविधि 4

आपके मित्र समूह की सामाजिक–सांस्कृतिक–आर्थिक संरचना को याद करने का प्रयास कीजिए। अपने सामाजिक–आर्थिक स्तर की तुलना उनसे कीजिए। निम्नलिखित पक्षों पर आपको क्या समानता या असमानता प्राप्त होती है?

प्र ष्न	आप	पहला मित्र	दूसरा मित्र	तीसरा मित्र
अभिभावकों का व्यवसाय				
अनुमानित वार्शिक आय				
अभिभावकों की षिक्षा				
आपकी शैक्षिक/रोजगार अपेक्षाएँ				
बोली जाने वाली भाषा				
धर्म				
घर				
लिंग				

यदि आप ध्यानपूर्वक अपने विद्यालय के मित्र समूह का विश्लेषण करेंगे, आप कुछ प्रतिमानों की पहचान करने में सक्षम होंगे। यद्यपि, मित्रता बच्चों के एक समूह में साधारण पसंद का विषय एवं एक सूत्र लगती है परंतु इसमें सामाजिक मानदंडों एवं स्तरीकरण का एक जटिल जालक होता है। इसी वजह से बच्चों में समूह निर्माण समाजषास्त्र, मनोविज्ञान एवं षिक्षा में अध्ययन का एक विषय है। ज्यादातर उदाहरणों में, विद्यालयों के मित्र समूह मध्यावकाष या खेल के मैदान में आसानी से देखे जा सकते हैं और इसलिए विद्यालय कक्षा में मित्र समूहों से सामान्यतः परिचित होते हैं। यद्यपि, इन मित्र समूहों के बारे में बहुत–सी बातें हो सकती हैं, जो वे नहीं जानते। यदि विद्यालय, एक मित्र समूह में बच्चों का सामाजिक प्रबंधन करे तो उसे निम्नलिखित मानदंडों पर इनमें विभिन्न समानताएँ देखने को मिलेंगी।

लिंगः प्रारंभिक कक्षाओं में बच्चे समान लिंग के ज्यादातर मित्र बनाते हैं। वे समान लिंग के बच्चों के खेलना और बैठना पसंद करते हैं। यह मिलता केवल समान लिंग के साथ सहूलियत पर आधारित नहीं होती वरन् इसके पीछे दूसरे लिंग के साथ प्रतिस्पर्धा एवं पसंद–नापसंद भी जुड़ी होती है। जैसे–जैसे बच्चा बड़ा होता है, दूसरे लिंग के प्रति स्वीकार्यता बढ़ जाती है। किषोरावस्था में विपरीत लिंगी संबंधों का लक्षण पाया जाता है जो इस स्तर पर संवेगात्मक विकास के कारण होता है जब बच्चे विपरीत लिंग में साथी तलाषने लगते हैं।

ऐसे बच्चों को भी देखा जा सकता है जो प्रारंभिक कक्षाओं में विपरीत लिंगी समूहों के साथ सुविधाजनक स्थिति में होते हें। जब ऐसी मित्रता को हतोत्साहित या चिन्हित किया जाता है तो इसका बच्चों के सामाजिक विकास पर प्रभाव पड़ता है। मुख्यतः हमारे समाज के, कठोर सामाजिक मानदंड लिंगों में स्वस्थ मेलजोल को भी रोकते हैं जो बाद में समाज को बाँट देता है।

आर्थिक वर्ग एक और क्षेत्र है जो मित्रता समूहों का निर्धारक है। यदि आप सामान्य तौर पर मित्रता समूहों का विश्लेषण करेंगे, आपको समान आर्थिक वर्ग के मित्रों से ज्यादा निकटता मिलेगी। आपको एक मित्र समूह में, बच्चों के परिवार की आय में समानता, उनके अभिभावकों के व्यवसायों में समानता और अभिभावकों के शैक्षिक स्तरों में भी समानता दिख सकती है। यदि विभिन्न आर्थिक वर्गों के बच्चों में मित्रता हो जाए तो उनकी मित्रता बड़ों के हस्तक्षेप या समय के साथ ही कम हो जाती है।

बच्चों के कपड़े, उनके सामान (भोजन, पेंसिल का डिब्बा), घर में बोली जाने वाली भाषा, विभिन्न प्रकार के अनुभव, परिवार की आर्थिक स्थिति को प्रदर्षित करते हैं। ये कारक, परोक्ष रूप से बच्चों की मित्र बनाने की प्रक्रिया में हस्तक्षेप करते हैं। बहुत से अध्ययन हुए हैं जो प्रदर्षित करते हैं कि कैसे आर्थिक वर्ग विद्यालयों में न केवल साथियों से, वरन् अध यापकों के साथ भी संबंध निर्माण को प्रभावित करता है और कैसे सामाजिक वर्ग की उत्पत्ति इस तार्किक आव्यूह से होती है। पॉल विली (1971) ने "लर्निंग टू लेवर" में ऐसा ही प्रयास किया है।

यह कहना गलत नहीं है कि सामाजिक वर्ग, जाति से प्रभावित होते हैं। परंपरागत रूप से, दबाकुचले वर्ग को आर्थिक स्तर और सामाजिक स्तर की सीमांतता की ओर संरचनात्मक रूप से निर्मित व्यावसायिक आव्यूह द्वारा और धकेला गया। इतिहास में, उन व्यवसायों को कम सामाजिक व आर्थिक मूल्य प्रदान किया गया जो किसी जाति विशेष तक सीमित है। इसने स्पष्ट रूप से उत्पीड़ित जातियों की सामाजिक आर्थिक गतिषीलता की अवरोधित किया और यह हमारे सभी सामाजिक संबंधों (विद्यालय साथी समूह सहित) में स्पष्ट होता है। यद्यपि जाति आधारित भेदभाव खुले तौर पर नहीं होता परंतु परोक्ष रूप से सभी जीवन क्षेत्रों में, विद्यालयों में भी सामाजिक भेदभाव परिलक्षित होता है। यह मध्याह्न भोजन, बैठने की संरचना, अध्यापक–अभिभावक सम्मेलन एवं कई अन्य अवसरों पर प्रदर्षित होता है। जाति, हमारे समाज में बच्चों के समाजीकरण का एक मजबूत पक्ष है। हम सब अपनी जाति से जुड़ाव और किसी विशिष्ट जाति के विषय में अवधारणा रखते हैं। यह कल्पना कठिन है कि एक मान्यता और सामाजिक संरचना, जो हमारे अनुभवों में गहराई तक जुड़ी है, हमारे सामाजिक संबंधों एवं मित्रता को प्रभावित नहीं करेंगी।

बोध प्रष्न

टिप्पणीः क) अपने उत्तर दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

8) आपको क्यों लगता है कि मित्र समूहों में लिंग, जाति और वर्ग दिखाई देते हैं?

....

....

....

....

....

....

9) क्या आपको लगता है कि धार्मिक जुड़ाव, बच्चों में मित्र संबंधों को प्रभावित करते हैं? कैसे?

....

....

....

....

....

विद्यालय की कल्पना एक ऐसे स्थान के रूप में की जानी चाहिए, जहाँ ऐसे स्तरीकरण को तोड़ा जाए। इसके लिए, एक विद्यालय संस्कृति की आवष्यकता है जो एक समतावादी विचारधारा को सुनिष्चित करे, जहाँ पाठ्यक्रम का अंतरण बच्चों में अंतर्निहित आदर्शों के आधार पर हो।

कक्षा में सामाजिक रचना

मित्र समूहों को पहचानना आसान है परंतु यह जानना आसान नहीं है कि कक्षा में बड़ा समूह कैसे स्थापित होता है? केवल प्रेक्षण से यह समझना संभव नहीं है कि बच्चों में कौन नेता है? कौन समस्या समाधान करने वाला है? कौन साथियों द्वारा सबसे अधिक पसंद किया जाता है? कौन सबसे ज्यादा मददगार है? कौन पसंद नहीं किया जाता है? आदि।

इन संबंधों को समझने के लिए, अध्यापक को इसके लिए विशेष विधि "समाजमिति" का प्रयोग करना होगा। समाजमिति का अंग्रेजी शब्द Sociometry लैटिन भाषा के शब्दों *Socius*, जिसका अर्थ है समाज और netrum, जिसका अर्थ है मापन, से बना है। यह व्यक्तियों के बीच संबंधों की श्रेणी को मापने की विधि है। समाजमिति इस तथ्य पर आधारित है कि बड़े और बच्चे अंतर्वैयक्तिक संबंधों में चयन करते हैं। वे तय करते हैं कि कहाँ बैठना या खड़े होना है?, किसको मित्र के रूप में देखना है या नहीं, कौन समूह के केन्द्र में है, कौन बहिश्कृत है, कौन पृथक है। जब समूह के सदस्यों को समूह के अन्य सदस्यों को एक विशिष्ट मानदंड पर चुनने को कहा जाता है, समूह में हर एक चयन करता है और स्पष्ट करता है कि उसने ऐसा क्यों किया? इन चयनों से समूह के भीतर की संरचना का एक विस्तृत चित्र उभरता है।

यहाँ अध्यापक के लिए एक गतिविधि दी गई है। जो उसे यह समझने में मदद करेगी कि बच्चे कैसे एक दूसरे से संबंध स्थापित करते हैं।

साधारण भाषा में प्रष्नों का साधारण सूची बनाइए और उसे कक्षा में सभी बच्चों को दीजिए। बच्चों में उन्हें दी गई सूची पर नाम लिखने को कहिए। सुनिष्चित कीजिए कि प्रक्रिया गोपनीय हो। प्रष्नों की सूची में ऐसे प्रष्न हों, जो बच्चों के अपने साथियों के बारे में विचार पहचानने में मदद करें। जैसे किः

- तुम किसके साथ रोज बैठना पसंद करोगे और क्यों?
- यदि तुम्हें अपने दत्त कार्य में कठिनाई आए तो तुम कक्षा में किस बच्चे के पास जाओंगे और क्यों?
- कक्षा में तुम्हारे विचार में कौन सबसे ज्यादा मददगार हैं? क्यों?

- अध्यापक की अनुपस्थिति में तुममें से कौन कक्षा प्रबंधन कर सकता है और क्यों?
- किसके साथ तुम्हें सबसे मजा आता है और क्यों?

एक बार बच्चे इसे पूरा कर लें, तो उनसे उत्तर एकत्र कर लें और अपने आप रखें। कक्षा के बाद आप उनका विश्लेषण करें और देखें कि बच्चों में आपसी संबंध कैसे हैं? इस प्रकार के प्रश्नों की सहायता से आप समूह द्वारा चयनित बच्चों को प्रश्नों में निहित गुणों के आधार पर पहचान सकेंगे और साथ ही यह भी पता लगेगा कि उन बच्चों को क्यों चुना गया?

इन चयनों से समूह की संरचना का वितरण पता चलता है। एक अध्यापक, इन संबंधों को मानचित्र से प्रदर्षित कर सकता है जिसे "Sociogram" कहते हैं। सोषियोग्राम के आँकड़ों को तालिका में भी प्रस्तुत किया जा सकता है, ऐसी तालिका को Sociomatrix कहा जाता है।

चयन सदैव किसी न किसी आधार या मानक के अनुसार किए जाते हैं। ये मानक व्यक्तिनिष्ठ भी हो सकते हैं जैसे कि व्यक्ति को पहली बार देखने पर पसंद या नापसंद की आंतरिक इच्छा। मानक अधिक वस्तुनिष्ठ एवं चेतन भी हो सकते हैं जैसे कि यह जानना कि किसी व्यक्ति विशेष के पास किसी कार्य को करने का आवष्यक कौषल है या नहीं। संबंधता का मापन केवल समूह में व्यवहार के आंकलन में उपयोगी नहीं होता वरन् सकारात्मक परिवर्तन लाने और परिवर्तन के स्तर को पहचाने में लाभकारी होता है। एक कार्यसमूह के लिए, समाजमिति द्वंद्वों को कम करने और संप्रेषण बढ़ाने के लिए एक शक्तिषाली उपकरण हो सकती है। बच्चे, जो कक्षा में परिधि पर हैं, उनकी भी पहचान की जा सकती है और अध्यापक उनको कक्षाकक्ष गतिविधियों में शामिल करने के लिए सकारात्मक कदम उठा सकता है।

2.5.2 स्वीकार्यता, प्रतिस्पर्धा, सहयोग एवं द्वंद्व

स्वीकार्यता

विशेष रूप से उच्च प्राथमिक कक्षाओं के बच्चे, अपने अभिभावकों व अध्यापकों की तुलना में अपने साथियों के मध्य अपनी ज्यादा स्वीकार्यता चाहते हैं। साथी समूह, बच्चों के संबद्धता समूह भी बन जाते हैं और उनके आत्म प्रत्यय और पहचान को प्रभावित करते हैं। कोई बच्चा, जो कक्षा में किसी सामाजिक समूह द्वारा स्वीकार्य नहीं होता, अकेला व भेदभावग्रसित अनुभव करने लगता है। कई बार बच्चे, साथी समूहों से जाति, वर्ग, धर्म आदि कारणों से पृथक कर दिए जाते हैं। यह वास्तव में विद्यालय संस्कृति को नुकसान पहुँचाता है क्योंकि इससे प्रदर्षित होता है कि अध्यापक द्वारा समझे बिना भी समाज की ये असमानताएँ कैसे कक्षा में हस्तक्षेप कर रही हैं। यद्यपि, यह आवष्यक नहीं है कि ये बच्चे के किसी साथी समूह के भागीदार न होने के कारण हो, यह कई अन्य कारणों से भी हो सकता है।

इस तथ्य के बाद भी, कि कुछ बच्चे कम बोलते हैं, कम अंतःक्रिया करते हैं, विद्यालय में कोई उनसे बात नहीं करता या संबंधित नहीं है, यह जीवन के प्रारंभिक वर्षों में अत्याधिक परेषानी का विषय है। कई बार, ऐसी परिस्थितियों को मात्र प्रेक्षण से समझना संभव नहीं होता। एक अध्यापक इस परिस्थिति को बेहतर समझने के लिए समाजमिति का प्रयोग कर सकता है। एक अध्यापक बच्चों से मित्रता प्राथमिकताओं से संबंधित प्रष्न पूछ सकता है (जैसे उन्हें किसके साथ खेलना पसंद है) और फिर उन बच्चों की पहचान करें, जिनका नाम किसी भी बच्चे ने न लिया हो। उत्तरों का आधार पर वह उन तरीकों को सोच सकते

हैं जिससे उन्हें परिस्थितियों को बेहतर समझने व हस्तक्षेप करने में मदद मिले? यह ध्यान रखना जरूरी है कि अध्यापक कोई भी ऐसा प्रष्न नहीं पूछेगा, जिससे कुछ बच्चों को चोट पहुँचे। जैसे कि अध्यापक कभी नहीं पूछ सकता कि "तुम कक्षा में किससे घृणा करते हो"? "तुम्हें कौन सबसे खराब लगता है।" आदि।

प्रतिस्पर्धा, सहयोग एवं द्वंद्व

सहयोग को "एक ऐसी सामाजिक प्रक्रिया जिसमें एक समूह के सदस्यों के साथ–साथ काम करके एक निर्धारित लक्ष्य तक पहुँचने को सामूहिक उपलब्धि के रूप में निष्पत्ति मूल्यांकन व पुरस्कृत किया जाता है" के रूप में परिभाषित किया गया है" (कोकले, 1994, पृ.49)। एक अध्ययन में बताया गया है कि सहयोग में सकारात्मक अन्योन्याश्रिता तथा प्रतिस्पर्धा में नकारात्मक अन्योन्याश्रिता प्रदर्षित होती है और पाया गया है कि विद्यार्थी सहयोगात्मक वातावरण में प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण की तुलना में अधिक समस्याओं का समाधान करते हैं। यद्यपि, सामूहिक कार्य की न्यूनतम आवष्यकताएँ, सहयोगात्मक अधिगम वातावरण की ओर नहीं जाती। इसे परस्पर सम्मान और सराहना के मूल्यों द्वारा, समूह के प्रत्येक सदस्य की क्षमताओं को मूल्य देकर तथा उचित प्रयोग करने और समूह के सावधानीपूर्वक नियोजन द्वारा, जिसमें बच्चे एक–दूसरे की क्षमताओं पर आश्रित हों और उससे सीखें, द्वारा स्थापित किया जाता है।

इस प्रकार के सदाचार की अनुपस्थिति में, सामूहिक कार्य में द्वंद्व उत्पन्न हो जाते हैं जो प्रतिकूल होते हैं। यह समझना भी आवष्यक है कि समूह के भीतर भी आंतरिक प्रतिस्पर्धा हो सकती है।

प्रतिस्पर्धा को "एक ऐसी सामाजिक प्रक्रिया, जिसमें एक ही कार्य या समान कार्य को करने पर व्यक्ति की निष्पत्ति, दूसरों की निष्पत्ति की तुलना के आधार पर पुरस्कृत किया जाता है" के रूप में परिभाषित किया गया है (कोकले, 1994, पृ.78)। बच्चे एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा करते हैं, पर कभी–कभी यह प्रतिस्पर्धा इतनी भीषण हो जाती है कि यह दुष्चिंता, तनाव एवं एक–दूसरे को नापसंद करने की हद तक बढ़ जाती है। अध्यापक को सुनिष्चित करना चाहिए कि वह साथियों में प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा न दे। वह सुनिष्चित करे कि बच्चे अपेक्षाओं के बोझ तले न दब जाएँ और प्रतिस्पर्धा की चरमसीमा की परिस्थितियों को जानबूझ कर न आने दिया जाए। कई बाद प्रतिस्पर्धा ही साथी समूह में द्वंद्व का आधार होती है। यह द्वंद्व शारीरिक, मौखिक या अप्रत्यक्ष हो सकते हैं। ये न केवल उस समय उलझे हुए बच्चों वरन, पूरे कक्षा वातावरण में तनाव और अषांति की परिस्थिति उत्पन्न कर देते हैं।

2.5.3 आक्रामकता एवं डराना–धमकाना

आक्रामकता का एक प्रकार हो सकता है, जिसमें प्रतिस्पर्धा स्पष्ट दिखाई दे। बच्चों में आक्रामकता के कई और कारण भी हो सकते हैं, जैसे विद्यालय जाने में प्रतिरोध तथा षिक्षा का अर्थ न समझना। कई बार समूहों और व्यक्तियों में आक्रामक व्यवहार एवं क्रियाएँ दिखाई देती हैं जैसे मारना, धक्का देना, पैर मारना, गुंडागिरी आदि। सामूहिक आक्रामकता से निपटना कुछ ज्यादा मुष्किल होता है जो कई कारणों से उत्पन्न होता है जिस पर गहरे व्यावसायिक चिंतन की आवष्यकता है। यद्यपि, सहयोगात्मक अधिगम वातावरण एवं विद्यालय, जो विभिन्न भागीदारों – प्रषासन, अभिभावक एवं समुदाय से मिलकर कार्य करते हैं, उन्हें ऐसी समस्याओं का सामना कमोबेष कम ही करना पड़ता है।

डराना–धमकाना भी बहुत सी कक्षाओं की सामान्य समस्या है। आपने ऐसे बच्चे देखे होंगे जो छोटे और कमजोर या सभी बच्चों के साथ दुर्व्यवहार करते हैं, उन्हें चिढ़ाते हैं या डराते

हैं। डराने–धमकाने में धन की अनैतिक माँग, दोपहर का खाना छीनना या कुछ ले लेना, या मजाक उड़ाना शामिल है। बड़ी कक्षाओं में इसका विद्रूप रूप रैगिंग, पिटाई या यौन उत्पीड़न के रूप में सामने आता है।

डराना–धमकाना हो सकता हैः

मौखिकः लोगों के नाम बनाना, बुरी बातें कहना, निरंतर चिढ़ाना

शारीरिकः धक्का देना, मुक्का मारना, चोट मारना या लात मारना

अषाब्दिक या सांवेगिकः गतिविधियों से बाहर कर देना, धमकाने वाली भाव–भंगिमाएँ बनाना

साइबरः मोबाइल या ई–मेल द्वारा डराने–धमकी भरे संदेष भेजना

डराना–धमकाना, विद्यालय वातावरण में समायोजन में असफलता का प्रतीक माना जाता है। बच्चा, जो दूसरों को डराता है, अक्सर खुद तनावपूर्ण स्थितियों से गुजर रहा होता है जो उसके छोटे व कमजोर बच्चों के प्रति विद्वेष में प्रदर्षित होती हैं। हो सकता है कि उसे विद्यालय या साथी समूह में नैसर्गिक रूप से वह पहचान न मिल रही हो, जो वह चाहता है। ऐसी भी परिस्थितियाँ देखी गई हैं जब एक बच्चा शारीरिक रूप से या अन्य कारणों से लगातार असफल होने या अध्यापक की प्रताड़ना के कारण कक्षा के सभी साथियों द्वारा डराया–धमकाया जाता हो। ऐसी स्थिति में डराना–धमकाना एक मानसिक सदमा या आघात में बदल जाता है। चरम परिस्थितियों में इसका परिणाम बच्चे द्वारा विद्यालय छोड़ देना या खुद को हानि पहुँचाने के रूप में भी सामने आ सकता है।

दोनो परिस्थितियों में, अध्यापक का हस्तक्षेप तुरंत आवष्यकता है। अध्यापक को डरने वाले व डराने वाले, दोनों में एक आत्म–प्रत्यय का विकास करने में मदद करनी होती है। समस्या का कोई एक समाधान नहीं है; प्रत्येक परिस्थिति में, समस्या के कारण और रणनीति तथा परिस्थिति से निपटने का तरीका, अलग–अलग हो सकता है। ऐसे मुद्दों की नियंत्रण से बाहर होने से पहले ही माता–पिता एवं प्रषासन से चर्चा करना परमाष्वयक है।

2.6 विद्यालयों से वंचित बच्चे

विद्यालय जाना, एक बड़ी संख्या में भारत के बच्चों के जीवन का अंग बन चुका है। हाल ही लागू षिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 ने देष के 6 से 14 वर्ष आयु के सभी बच्चों के लिए निःषुल्क एवं अनिवार्य षिक्षा सुनिष्चित की है। इसके लागू होने से, बड़ी संख्या में विद्यालय खोले जा रहे हैं, बड़ी संख्या में अध्यापकों की नियुक्ति हो रही है, अध्यापक प्रषिक्षण के और प्रावधान बनाए गए हैं और विद्यालयों में बड़ी संख्या में बच्चे नामांकित हुए हैं। यह अपेक्षा है कि 2013 तक सभी बच्चे विद्यालयों में हों। सर्व षिक्षा अभियान, सभी को प्रारंभिक षिक्षा की पहुँच सुनिष्चित करने के लिए, सरकार का एक सर्वोत्कृष्ट कार्यक्रम है। इसलिए, यह समझना अनिवार्य है कि विद्यालय जाने में क्या–क्या सम्मिलित हैं और कैसे इस अनुभव को बेहतर बनाया जा सकता है।

अभी भी लगभग 40 लाख बच्चे हैं, जो विद्यालयों में नामांकित नहीं हैं। इसी प्रकार विद्यालय बीच में छोड़ने वाले बड़ी संख्या में हैं। बड़े होने के अनुभव हर बच्चे में भिन्न होते हैं। जैसे कि पहले की इकाइयों में चर्चा की गई है, बच्चों के संदर्भ में बहुत से कारक बचपन की प्रकृति एवं बालानुभव तथा बच्चों के विकास के विभिन्न पक्षों – शारीरिक, सांवेगिक, संज्ञानात्मक एवं सामाजिक विकास, दोनों को प्रभावित करते हैं। जबकि बहुत से बच्चों के काफी सकारात्मक अनुभव हैं, क्या यह ठीक है कि यह कुछ विशेष बच्चों के लिए विशेषाधिकार ही बना रहे? यह हमारे जैसे समाजों की सच्चाई है जहाँ सामाजिक और आर्थिक आधारों

पर बड़ा स्तरीकरण है, और यहाँ समाज की न्यूनतम अभिरक्षा में घोर विषमताएँ और भेदभावपूर्ण प्रचलन हैं। आगे बढ़ने से पहले, निम्नलिखित उदाहरण पढ़िए।

दस साल की लखी, एक सुदूर गाँव में रहती है। उसका नाम गाँव के विद्यालय में लिखा है पर वह बहुत कम विद्यालय जाती है क्योंकि उसको घर पर बहुत काम करना होता है। लखी की माँ खेतों में काम करने जाती है और उसे अपने छोटे भाई बहिनों की देखभाल करनी होती है और घर का काम भी। लखी कभी–कभार विद्यालय जाती है तो उसे अध यापक की कोई बात समझ नहीं आती, क्योंकि उसने बहुत कुछ छोड़ा हुआ है। वह थकी हुई और नींद का अनुभव भी करती है और अपने कार्य पर ध्यान नहीं दे पाती है। अब वह बड़ी हो रही है तो उसके माता–पिता अपने समुदाय के प्रचलन के अनुसार उसके विवाह की बात करने लगे हैं।

अब्दुल की आयु 11 वर्ष है। उसके चार छोटे भाई और बहनें हैं। अब्दुल के पिता बुनकर (जुलाहा) हैं और वे साड़ियाँ बुनते हैं परंतु उन्हें पर्याप्त काम नहीं मिल रहा क्योंकि बुनाई का रेषमी धागा बहुत महँगा हो गया है और अधिकांष धागा बाज़ार में आने से पहले ही मोबाइल फोनों और इंटरनेट के प्रयोग के माध्यम से बिक जाता है। साड़ियों की माँग भी कम हो गई है। अब्दुल को विद्यालय जाना पसंद है परंतु उसके माता–पिता को लगता है कि अब्दुल विद्यालय में कुछ खास नहीं पढ़ सीख रहा क्योंकि चौथी कक्षा में होने के बावजूद भी वह मुष्किल से ही पढ़ लिख पाता है। उसके माता–पिता उसको उसके चाचा के पास शहर भेज रहे हैं जहाँ वह पोषाक बनाने की फैक्टरी में काम करेगा जिसमें अब्दुल जैसे बहुत से बच्चे काम करते हैं।

सुन्दर एक तेरह वर्षीय लड़का है जो दिल्ली के एक थोक बाज़ार में सब्जी खरीदने वालों के लिए कुली का काम करता है। पाँच साल पहले उसका परिवार काम की तलाष में पष्चिम बंगाल के एक गाँव से यहाँ आया। सुंदर जब प्रवेष लेने विद्यालय गया तो उसकी आयु ज्यादा बताकर उसे प्रवेष देने से मना कर दिया गया। दुकानदार के हस्तक्षेप के बाद उसे विद्यालय में प्रवेष मिला क्योंकि यह एक दिन बड़ा आदमी बनना चाहता है। षिक्षा का अधिकार के अंतर्गत उसे आयु और उपयुक्त कक्षा का अंतर दूर करने के लिए विशेष प्रषिक्षण केन्द्र पर भेजा गया। यद्यपि उसकी प्रगति बहुत कमजोर है और अध्यापक को उससे ज्यादा उम्मीद नहीं है।

जीनत एक दस वर्षीय बच्ची है जिसके माता–पिता जगह–जगह दैनिक मजदूरी करते हैं। हर बार उसका परिवार काम की तलाष में एक–जगह से दूसरी जगह जाता है। उपज के दिनों में उसका परिवार बिहार के तराई इलाके में अपने गाँव में होता है वहाँ वे खेतों में मजदूरी करते हैं। बाकी समय वे दिल्ली आकर, इमारतों के बनने में मजदूर का काम करते हैं, जीनत का परिवार जब गाँव होता है, तो जीनत विद्यालय जाती है, पर जब वह दिल्ली जाती है, विद्यालय छोड़ देती है। वह विद्यालय में गति नहीं पकड़ पाती पर फिर भी वहाँ जाने की इच्छुक है। उसके माता–पिता और अध्यापक भी चाहते हैं कि वह अपनी पढ़ाई पूरी करे परंतु परिस्थितियों का समाधान किसी के पास नहीं है।

बोध प्रष्न

टिप्पणी: क) अपने उत्तर दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

10) उपर्युक्त उदाहरणों में, चारों बच्चों की पाँच प्रमुख समस्याओं की पहचान कीजिए और व्याख्या कीजिए कि बाल विकास के विभिन्न पक्षों को यह कैसे प्रभावित करती हैं।

क्र.सं.	मुख्य समस्या	विकास के पक्ष जो प्रभावित हो रहे हैं।
1)		
2)		
3)		
4)		
5)		

आपने भी अध्यापक के रूप में या अन्य स्थितियों में लखी, जीनत, अब्दुल और सुन्दर जैसे बच्चे देखें होंगे। हमारे देष में ऐसी ही परिस्थितियों में बहुत से बच्चे हैं। यद्यपि हमारे देष ने उल्लेखनीय आर्थिक प्रगति की है और बहुत सी सुविधाओं में सुधार हुआ है पर हमारी जनसंख्या का बड़ा हिस्सा आज भी गरीबी और उपेक्षा में जी रहा है। उपर्युक्त उदाहरणों के विश्लेषण से आप जानेंगे कि गरीबी इनमें सबसे बड़ा कारक है जो बच्चों को प्रभावित कर रहा है, पर इसके साथ ही बहुत से अन्य कारक जैसे लिंग व सामाजिक भेदभाव व मूलभूत सुविधाओं की कमी भी इसमें शामिल हैं। यदि एक अध्यापक बच्चों की भौगोलिक पृष्ठभूमि को समझने का प्रयास करेगा तो उसे जाति, जनजाति, धर्म व अन्य बहुत से कारक मिलेंगे जो परिस्थिति को प्रभावित करते हैं। एक गहन विश्लेषण से स्पष्ट होगा कि कैसे ये विभिन्न परिस्थितियों में गरीबी और वंचन एवं बहिष्करण से जुड़े हैं।

गतिविधि 5: निम्नलिखित तालिका का अध्ययन कीजिए व नीचे लिखे प्रष्नों के उत्तर ढूँढ़िए।

तालिका 2.1: दिल्ली में विद्यालय छोड़ने की दर (2004–2000)

वर्ष	सभी वर्गों के बच्चे			अनुसूचित जाति		
	कक्षा I-VIII			कक्षा I-VIII		
	लड़के	लड़कियाँ	कुल	लड़के	लड़कियाँ	कुल
2007-08	0.00	0.00	0.00	37.64	32.57	35.16
2006-07	22.67	26.39	23.49	40.78	33.64	37.29
2005-06	12.54	20.22	16.34	41.98	48.91	45.77
2004-05	27.71	28.53	28.12	0.00	0.00	0.00

स्रोतः चुघ, सुनीता (2011), *ड्रापआउट इन सेकेण्डरी एजुकेषनः ए स्टडी ऑफ चिल्ड्रन लिविंग इन स्लमस ऑफ दिल्ली*, न्यूपा (ऑपषनल पेपर 37), पृ. 6

1) किस प्रारंभिक कक्षा में विद्यालय छोड़ने की दर उच्चतम है? आपके विचार से इसके क्या कारण हैं?
2) लिंगानुसार, किसकी विद्यालय छोड़ने की दर अधिकतम है? इसके क्या कारण हो सकते हैं?
3) किस वर्ग के विद्यार्थियों की विद्यालय छोड़ने की दर अधिकतम है? इसके कारण बताइए।

जैसा कि आपने देखा होगा कि अनुसूचित जाति में अन्य वर्गों की तुलना में विद्यालय छोड़ने की दर ज्यादा है। जब आप इसके कारण ढूँढ़ने का प्रयास करेंगे, तो पाएँगे कि लड़कियों और पिछड़े बच्चों की षिक्षा को बहुत से कारक प्रभावित करते हैं। जैसे लखी का कम आयु में विवाह, एक कारण है।

2.7 सारांष

एक अध्यापकों के रूप में, उस परिप्रेक्ष्य को समझना आवष्यक है, जहाँ से विद्यार्थी आते हैं और उन्हें कक्षा वातावरण सहायक बनाने के लिए क्या करना है? जब बच्चे विद्यालय नहीं आते तो भी उनके जीवन और दुनिया का समझना महत्वपूर्ण है। इससे अध्यापक को विद्यालय गमन के आलोचनात्मक विश्लेषण में मदद मिलेगी और यह जानने में भी कि बहिष्करण कैसे होता है। बहुत से उपर्युक्त उदाहरणों से पता चलता है कि विद्यालय सभी बच्चों का प्रतिनिधित्व नहीं करते, संभवतः उन 40 लाख का, जो विद्यालयों में नहीं हैं या कई लाख, जिनकी गिनती नहीं है। यह उन बच्चों के जीवन को भी प्रदर्षित नहीं करते जो विद्यालय नहीं आते या छोड़ चुके हैं। इसी प्रकार, एक बड़ी संख्या उन बच्चों की है जो विद्यालयों में तो हैं परंतु वे क्या सीख रहे हैं, इसका कोई अर्थ नहीं है। ऐसा लगता है कि विद्यालय केवल उन कुछ बच्चों के लिए हैं जो विद्यालय जाने का समय और अवसर मूल्य वहन कर सकते हैं और दूसरों की तुलना में कहीं अधिक अपने अनुभवों को व्यवस्थित करते हैं। हाल ही में हुए योजनागत परिवर्तनों जैसे षिक्षा का अधिकार व पाठ्यक्रम परिवर्तनों जैसे राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005 से विद्यालय पहले की तुलना में एक बेहतर स्थान हो गए हैं। यह मूल्यवान समय है जिसमें अध्यापक अपने लिए नए प्रकार की भूमिका की कल्पना करें और वे परिवर्तन लाए जो विद्यालय एवं कक्षाओं में देखे जाने अपेक्षित हैं।

2.8 इकाई के अंत में अभ्यास

- कोई दो उदाहरण दीजिए, जिनका अनुभव आपने घर–विद्यालय सातत्य और असातत्य के रूप में किया हो।
- “बच्चे किसे अध्यापक का सबसे पसंदीदा विद्यार्थी मानते हैं” को समझने के लिए उन प्रष्नों की सूची बनाइए जो आप समाजमिति में प्रयोग करेंगे।
- कोई दो ऐसे उदाहरण दीजिए। जिनमें आप उन बच्चों के अनुभवों का वर्णन कर सकें जो या तो विद्यालय देर से आए/या विद्यालय छोड़ दिया/या विद्यालय में नामांकित नहीं हैं।

2.9 बोध प्रष्नों के उत्तर

1) अभिभावक, अध्यापक, षिक्षण–अधिगम नीति एवं घर व विद्यालय के बीच भाषा एवं संवाद। बच्चों व अध्यापकों में अंतःक्रिया परमावष्यक है। माता–पिता को भी विद्यालय के विषय में जानना चाहिए। स्थानीय भाषा में षिक्षण का बच्चे पर बहुत प्रभाव पड़ता है। कक्षा में बाल केन्द्रित नीति आवष्यक है।

2) दूसरे उदाहरण में अध्यापिका की तरह। नीतू की षिक्षिका, अमीना, बच्चों व उनके माता–पिता से ठीक से बातचीत करती है। उसे बाल मनोविज्ञान का अच्छा ज्ञान है।

3) अपने अनुभव लिखें।

4) इस परिस्थिति में षिक्षिका को कोइना की सामाजिक पृष्ठभूमि समझने का प्रयास करना होगा। तभी वह कोइना को बिना अधिक अपेक्षाओं के विद्यालय आने के लिए प्रेरित कर सकती है।

5) अपने विचार लिखें।

6) अपनी प्रतिक्रिया लिखें।

7) अध्यापिका को कोइना की सामाजिक पृष्ठभूमि व संरचना समझनी है तभी वह कोइना के विद्यालय से समायोजन के लिए अधिगम के तरीके सोच सकती है।

8) मध्याह्न भोजन, बैठने के क्रम और खेलते समय लिंगभेद, जाति एवं वर्ग भेद दिखाई देते हैं।

9) अपने अनुभव लिखें।

10)

क्र.सं.	**मुख्य समस्या**	**विकास के पक्ष जो प्रभावित हो रहे हैं।**
1.	अनियमितता	संज्ञानात्मक एवं सामाजिक विकास
2.	बाल श्रम	संज्ञानात्मक, सामाजिक एवं भावात्मक विकास
3.	अधिक आयु होना	संज्ञानात्मक एवं सामाजिक विकास
4.	देषांतर गमन	संज्ञानात्मक एवं सामाजिक विकास
5.	विद्यालय बीच में छोड़ देना	संज्ञानात्मक विकास

2.10 पठनीय सामग्री

कुमार, कृष्ण (1996) *लर्निंग फ्रॉम कांफ्लिक्ट,* नई दिल्ली, ओरियंट लॉगमैंन

लाओसा, एल.एम. (1982), "स्कूल ओकूपेषन, कल्चर एंड फैमिलीः दी इम्पैक्ट ऑफ पैरेन्टल स्कूलिंग ऑन द पेरेन्ट चाइल्ड रिलेषनषिप" *जर्नल ऑफ एजुकेषनल सायकोलॉजी*, 74, 791–827

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रषिक्षण परिषद (2005), *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा,* राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रषिक्षण परिषद, दिल्ली, भारत।

वुलफ्लॉक, अनीता, (2004), *एजुकेषनल सायकोलॉजी,* दिल्लीः पियरसन प्रिटिंस हॉल।

कोकले जे. (1994), स्पोर्ट इन सोसाइटीः इष्यूज एंड कंट्रोवरसीज, सेंट लुईस, मोसबे